International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

मानवीय मूल्यों के निर्माण में संस्कृत का योगदान

दिनेश कुमार शोधार्थी
एमफिल् (संस्कृत)
म0द0वि0, रोहतक
dineshchopra41@gmail.com
9992077008

संस्कृत भाषा को केवल पूजा–पाठ या कर्मकाण्ड तक ही सीमित मानना असंगत है। ज्ञान–विज्ञान का ऐसा प्रचुर–भण्डार अन्यत्र दृश्टिगत नहीं होता, क्योंकि 473 ई0 में जन्म लेने वाले आर्यभट्ट ने विश्व को सर्वप्रथम बताया कि 'सूर्य स्थिर है, पृथ्वी सूर्य क चारों ओर घूमती है', जिसके फलस्वरूप दिन और रात होते हैं तथा ज्योतिष–शास्त्र व नक्षत्र–विषयक खोज इनकी महत्त्वपूर्ण देन है। राजनीति और अर्थशास्त्र के लिए आचार्य चाणक्य का अर्थशास्त्र एक सर्वमान्य ग्रन्थ है। भाषा–विज्ञान की दृष्टि से विश्व का प्रथम ग्रन्थ यास्काचार्य का निरूक्त है। भारतीय वैय्याकरण पाणिनि, कात्यायन और पतंजलि भाषा–वैज्ञानिक ही माने जाते हैं। कम्प्यूटर के लिए संस्कृत भाषा सबसे उपयुक्त भाषा है। आचार–व्यवहार की शिक्षा के लिए वैदिक धर्मसूत्रों पर आश्रित स्मृतियाँ लिखी गयी जो वर्णाश्रम धर्म की परिचायक हैं।

मनुस्मृति में सृष्टि के आरम्भ से लेकर मानव समाज के विकास तथा दैनिक जीवन के कर्त्तव्यों के विवेचन के साथ मोक्ष तक का वर्णन है। आचार्य कणाद को भौतिकशास्त्र का प्रथम विद्वान माना जाता है, जिन्होंने र्स्वप्रथम 'अणु' की चर्चा की है।

पं0 जवाहर लाल नेहरू को संस्कृत से प्रेम था और इसकी महत्ता ने उनको अपनी और खींचा। वे लिखते हैं, "भारत के इतिहास में संस्कृत का जो हाथ रहा है, वह विश्व में किसी भी भाषा का किसी भी कौम के इतिहास में नही रहा।"[1]

"सा प्रथमा संस्कृति : विश्ववारा।"[2]

अर्थात यह विश्व को वरण करने वाली श्रेष्ठ 'संस्कृति' है। सुप्रसिद्ध इतिहासकार मि0 डाडवेल कहते हैं "भारतीय संस्कृति महासमुद्र के समान है, जिसमें अनेक नदियाँ आ–आकर विलीन होती है।"

वेदानुसारी आर्ष धर्म–ग्रन्थों के अनुकुल लौकिक तथा पारलौकिक अभ्युदय एवं निःश्रेयसोपयोगी कार्य ही मुख्य संस्कृति है और वही वैदिक संस्कृति अथवा भारतीय संस्कृति है। वैदिक संस्कृति ही सब संस्कृतियों की जननी है। दर्शन, भाषा, साहित्य, ज्ञान–विज्ञान, इतिहास, कला आदि संस्कृति के सभी अंगों पर वेदादिशास्त्रमूलक सिद्धान्तों की छाप है वेदों की 'वसुधैव कुटुम्बकम्'[3] 'कृणवन्तो विश्वमार्यम्' आदि सुन्दर उक्तियों में मानव–मात्र के प्रति आत्मीयता के भाव व्यक्त किये गये हैं। यही हमारी संस्कृति की सार्वभौमिकता है।

ऋषीणामाद्यानां गहनमननावाप्तसुयशाः

श्रुतीनां शास्त्राणां निरिवलगुण–तत्त्वार्थनिलया।

[1] Discovery of India

[2] यजुर्वे ।

[3] भागवत पुराण

पुरातत्त्वाधारा सकलभव–ज्ञानाब्धिविभवा

जयेद्दैवी वाणी त्रिभुवनमनोज्ञा बुधप्रिया।।

अर्थात संस्कृत विश्व की प्राचीन भाषा होने के कारण महत्त्वपूर्ण है प्राचीन भारत की सभ्यता और संस्कृति को प्रतिबिम्बित करने वाली तथा भारतवर्ष की कीर्ति को चिरस्थायी रखने वाली पुरातत्त्व भाषा केवल संस्कृत है इसी लिए कहा है– 'भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा,'। भारतवर्ष की इस आत्मस्वरूपा भाषा को लोगों ने श्रद्धावश देववाणी, गीर्वाणवाणी या सुरभारती कहा है। पश्चिम देश के प्रकाण्ड विद्वान् प्रो0 मैक्समूलर ने मुक्त कण्ठ से संस्कृत को महत्त्व के विषय में कहा है – "सम्पूर्ण विश्व में समस्त प्राकृतिक साधनों से सम्पन्न, सौन्दर्य, शक्ति और सम्पत्ति से समलंकृत देश मेरे विचार से भारतवर्ष ही है।"

भौगोलिक एकता को स्पष्ट करने के लिए भी संस्कृत भाषा का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है।

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।

वर्षं तद्भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः।।[4]

धर्म और संस्कृति के आधीन एकता प्राप्त करने वाले इस देश के धार्मिक व्यक्ति आज भी स्नान के समय भारत की विभिन्न नदियों के नाम एक साथ लेते है–

गंगा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।

[4] वायुपुराण।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

नर्मदा सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरू।।[5]

संस्कृत भाषा के अन्तर्गत समस्त ब्रह्माण्ड के लिये विश्वपोषक मड़ग्लकारी भावना है –

सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माकश्चिद्दुःखभाग्भवेत्।।

कठोपनिषद में यम–नचिकेता का संवाद भी बड़े रोचक ढ़ग से प्रस्तुत किया गया है–

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।

बुद्धिं तु सारथि विद्धि मनः प्रग्रहमेव च।।

इन्द्रियाणि हयानाहुविर्षयांस्तेषु गोचरान्।

आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः।।[6]

अर्थात तुम जीवात्मा को रथ का स्वामी समझो और शरीर को ही रथ समझो और बुद्धि को सारथी समझो और मन को लगाम समझो। विद्वान् ज्ञानी पुरूषों न इन्द्रियों को घोड़े कहा है और इन्द्रियों के शब्द, स्पर्श आदि विषयों को उन घोड़ों के विचरण करने का मार्ग बतलाया है। इस प्रकार इस शरीर, इन्द्रिय एवं मन से युक्त आत्मा

[5] वही।

[6] कठोपनिषद् अ. 1, व–3, श्लोक– 3–4

को भोग करने वाला 'भोक्ता' कहा गया है। इस प्रकार आत्मा के विषय में ज्ञानप्रदान किया गया है।

इस देववाणी के द्वारा राष्ट्रीय भावना को दर्शाने का कार्य भी सम्पन्न किया गया। यह भाषा राष्ट्रीय एकता का मूल स्त्रोत है। काव्य या सृजनात्मक रचनाओं के अतिरिक्त भारत के विभिन्न प्रदेशों में व्याप्त वास्तु, स्थापत्य, चित्र, संगीत आदि ललित कलाओं और विद्या की सभी विधाओं और ज्ञान–विज्ञान की उत्पत्ति सबसे पहले इसी भाषा में हुई। वेद ग्रन्थों में हमारी समस्त उपासना और सांप्रदायिक भेदभावों की निर्मूलता इन वैदिक घोषणाओं से प्रमाणित होती है। अथर्ववेद में कहा गया है –

"माता भूमिः,पुत्रोऽहं पृथिव्याः।"[7]

अर्थात भूमि मेरी माँ है और मै पृथ्वी का पुत्र हुँ।

"संगच्छध्वं संवदध्वं स वो मनांसि जानताम्।"[8]

इन मन्त्र में एक साथ आगे बढ़ने, ओर एक स्वर में बोलने और सामनस्य रखने की कामना की गई है। "सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै" ऐसे मन्त्रों में भी सर्वथा एक साथ रहने, खाने पीने और पराक्रम करने का संदेश दिया गया है।

"समानो मन्त्रः समितिः समानी, समानी व आकूतिः,

समाना हृदयानि वः, समानमस्तु वो मनो"[9]

[7] अर्थर्ववेद (पृथिवी सुक्त)।

[8] यजु. सामनस्य सूक्त

इन वाक्यों के द्वारा परामर्श, एक लोकशक्ति समिति, एक हृदय और एक मन होने का उन्नत विचार वेद के द्वारा संस्कृत भाषा ने दिया है। धर्म के विषय में तर्क प्रस्तुत होता है –

धर्म यो बाधते धर्मो न स धर्मः कुधर्म तत्।

अविरोधात् तु यो धर्मः स धर्मः सत्यविक्रमः।।[10]

अर्थात् जो धर्म दूसरे धर्मों को बाधा डालता है वह धर्म निन्दित है। जो धर्म दूसरे धर्मो का विरोध नही करता है वही वास्तविक धर्म है संस्कृत भाषा ने राष्ट्र और मातृभूमि के लिये त्याग और बलिदान करने की प्रदान दी है। अथर्ववेद में कहा गया है कि –

अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम्।

अभीषऽस्मि विश्वाषाडाशामाशां विषासहिः।।[11]

अर्थात मैं अपनी मातृभूमि के लिए, उसके दुःखो के विमोचन के लिये सब प्रकार के कष्ट सहने के लिए तैयार हूँ। वे कष्ट जिस और से आएँ, चाहे जिस समय आएँ, मुझे चिन्ता नहीं। मैं अभी मातृभूमि के सम्बन्ध में जो कहता हुँ वह उसकी सहायता के लिए है। मैं ज्योतिपूर्ण, वर्चस्वशाली और बुद्धियुक्त होकर मातृभूमि का दोहन

[9] अथर्ववेद

[10] अथर्ववेद

[11] अथर्ववेद

करने वाले शत्रुओं का विनाश करता हूँ। संस्कृत में लिखित अनेक शास्त्र तो इस राष्ट्र की एकता ही नहीं अपितु विश्वबन्धुत्व का सन्देश देते हैं।

नैतिक मूल्यों की अत्यन्त मूल्यवान् धरोहर हमें संस्कृत साहित्य में प्राप्त होती है –

केवलाधो भवति केवलादी तथा.....[12]

अथं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।[13]

उदात्त आदर्श संस्कृत साहित्य की ही देन है। सत्य सम्भाषण के महत्त्व को दर्शाते हुए असत्य भाषण को वाणी का छिद्र कहा गया है –

"एतद् वाचश्छिद्रं यदनृतम्।"[14]

अनृतभाषी की वाणी सारहीन हो जाती है। श्रद्धा तथा सत्य की मिथुन कल्पना अत्यन्त सुन्दर एवं रोचक है।

"श्रद्धा पत्नी सत्यं यजमानः"[15]

---

[12] वही।

[13] भागवत पुराण

[14] ऐतरेयब्राह्मण।

[15] वही।

सत्य श्रद्धा के साथ संयुक्त होकर स्वर्ग लोको को जीत लेता है। सभी प्रकार की साम्प्रदायिकता एवं धर्मों के विवाद को निर्मूल करते हुए विविधता में एकता का सन्देश देने वाले मन्त्र –

"एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति"[16] तथा

सुवर्णे विप्राः कवयो वचोमि एकं सन्तं बहुधाकल्पयन्ति[17]

–आदि वाक्य वैदिक ऋषि की विकसित भावना के परिचायक ही नहीं भारतीय संस्कृति की आधारशिला भी हैं। भारतीय संस्कृति का समन्वयवादी दृष्टिकोण इसी सत्य से अनुप्राणित है।

इस प्रकार राष्ट्रीय एकता की संस्थापिका एवं विश्व की सर्वोत्तम संस्कृति की संवाहिका इस भाषा एवं इसमें रचित साहित्य के अभाव में आज भी भारतीय जीवन प्रगति की कल्पना नहीं कर सकता है। संस्कृत वाङ्.मय कुछ कवियों एवं लेखकों की कृतियों का संग्रहमात्र नहीं है। हमारा जीवन, हमारा बहुविध चिन्तन, सामाजिक और धार्मिक अनुष्ठानों की उत्पत्ति और सांस्कृतिक परम्पराओं का क्रमिक विकास, यह सभी हमें संस्कृत साहित्य के माध्यम से प्राप्त होते हैं। कोई भी भारतीय चाहे वह संस्कृत का ज्ञान रखता है अथवा नहीं, अनजाने में ही अपने भावनात्मक जीवन में संस्कृत से प्रेरित हुए बिना नहीं रह सकता। हमारे प्रथम प्रधानमन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने लिखा है –

[16] स्मृ0

[17] वही।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

"संस्कृत इस राष्ट्र की सबसे महत्त्वपूर्ण धरोहर है। यह एक ऐसा ज्ञानसागर है जिसका जितना मन्थन किया जाये उसकी गम्भीरता उतनी ही बढ़ती जाती है। इस धरोहर की रक्षाा ही नहीं वरन् विकास के लिए भी हमारी सरकार निरन्तर प्रयत्नशील है।"[18]

इस प्रकार संस्कृत भाषा साहित्य का स्त्रोत दिनों दिन अजस्त्र रूप से बहता आ रहा है और किसी भी आधुनिक भाषा के लिए उपजीव्य है।

[18] Discovery of India